

13 मई, 2015

स्मृति

मीठे बच्चे: अब तुम जानते हो कि बाप ज्ञान का सागर है और सुख का सागर है । उसने पहले भी यह ज्ञान दिया था । इसलिए ही उनको याद करते हैं ।

मीठे बाबा, सारा दिन मैं इस बात का अभ्यास करूंगा: मैं एक आत्मा हूँ । मैं बाप से सुन रही हूँ । मैं आत्मा उनका ज्ञान धारण कर रही हूँ । मैं एक अविनाशी आत्मा हूँ ।

स्मृती

ऊपर की स्मृती से प्राप्त होने वाली शक्ति से मैं स्वयं को निरंतर सशक्त अनुभव कर रहा हूँ । मुझमें इस बात की जागृती आ रही है कि मेरी स्मृती से मेरा स्वमान बढ़ता जा रहा है । मैं इस बात पर ध्यान देता हूँ कि मेरी स्मृती से मुझमें शक्ति आ रही है और इस परिवर्तनशील संसार में मैं समभाव और धीरज से कार्य करता हूँ ।

मनो-वृत्ति

बाबा आत्मा से: आत्म-अभिमानि बनने का ही मुख्य पुरुषार्थ है । तुम्हे सतोप्रधान बनने का फुरना लगा रहना चाहिए । तुम्हारे मुख से पत्थर कभी नहीं निकलें । अगर तुमसे कुछ भूल हो जाए तो तुरंत बाबा को बता दो: बाबा मुझसे यह गलती हुई है । कृप्या मुझे माफ़ कर दो । अपनी भूल कभी नहीं छिपाओ ।

नम्रचित बनने का मेरा दृढ़ संकल्प है जिससे मुझे जो पुरुषार्थ मैं कर रहा हूँ उसमें सचेत रहने में मदद मिलती है । नम्रचित वृत्ति रखने से, पावन बनने की मेरी जिम्मेवारी के प्रति मैं संवेदनशील बन जाता हूँ । मैं लापरवाही छोड़ दूँगा और लगातार स्वयं को सुधारने में व्यस्त रहूँगा ।

दृष्टि

बाबा आत्मा से: जब आप बाप की याद में रहते हो तो कभी भी कुछ गलत नहीं कहोगे । गलत दृष्टि भी नहीं होगी । सब कुछ देखते हुए भी ऐसा लगेगा जैसे आपने कुछ नहीं देखा । आपका ज्ञान का तीसरा नेत्र अब खुल गया है ।

“बुरा न देखो” का मेरा दृढ़ संकल्प है और इसके बजाय यह अनुभव करना है कि बाबा मुझे वह बनाते हैं जो अपने ज्ञान के तीसरे नेत्र से तीनों कालों को देख सकता है ।

लहर उत्पन्न करना

मुझे शाम 7-7:30 के योग के दौरान पूरे ग्लोब पर पावन याद और वृत्ति की सुंदर लहर उत्पन्न करने में भाग लेना है और मन्सा सेवा करनी है । उपर की स्मृति, मनो-वृत्ति और दृष्टि का प्रयोग करके विनिम्रता से निमित्त बनकर मैं पूरे विश्व को सकाश दूँगा ।